तकदीर किया है?

मौलाना मुहम्मद इमरान कासमी बिज्ञानवी.

एक हज़ार मुन्तखब हदीसे बुखारी, मुस्लीम, मिश्कात शरीफ हिन्दी.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

रसूलुल्लाहﷺ की हदीस मुबारक हे - तकदीर के मामले मे बहस करना मना हे. (मुस्लीम)

तकदीर का मतलब हे मिक्दार मुकर्रर करना

शरीअत की इस्तिलाह (परिभाषा) मे मख्लूक के अच्छे या बुरे कामों के बारे मे ज़मीन व आसमान के मालिक ने जो कुछ लिखा हे वह तकदीर कहलाता हे. दूसरे अलफाज़ मे तकदीर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का वह इल्म हे जो भविष्य से संबन्धित हे जो कभी गलत नहीं हो सकता.

तकदीर के बारे मे पाई जाने वाली उलझनों का सबब उसके सही मफ्हुम की जानकारी न होना हे.

मतलब व मफ्हूम समझ लेने के बाद उसके बारे मे कोई शक व शुब्हा बाकी नहीं रहता हे.

यह बात रोज़ाना हमारे देखने मे आती हे कि इन्सान अपने इल्म और तजरूबे की बुनियाद पर किसी चीज़ के बारे मे कोई राई कायम कर लेता हे और उसके बहुत ही ज़्यादा सीमित इल्म के बावजूद कई बार उसकी राई और अन्दाज़ा सौ फीसद दुरूस्त साबित हो जाता हे.

इन्सान के उलट अल्लाह तआला का इल्म इस कदर वसीअ और न खत्म होने वाला हे कि उसके लिये अतीत, वर्तमान और भविष्य, गायब और हाज़िर, दिन और रात, रोशनी और अंधेरा जैसी परिभाषायें बिल्कुल बेमायने होकर रह जाती हे, उसके सामने हर चीज़ खुली किताब की तरह हे.

इस वसीअ और असीमित इल्म की बदौलत मख्लूक के बारे मे उसकी लिखी हुई तकदीर कभी गलत नहीं हो सकती, अपने उसी वसीअ (बेइन्तिहा) इल्म की रोशनी मे अल्लाह तआला ने इन्सान के अमल करने से पहले ही उसके हिसाब (खाते) मे लिख दिया हे कि यह इन्सान अच्छे या बुरे और क्या क्या काम करेगा और इसकी जज़ा या सज़ा क्या होगी.

रसूलुल्लाहﷺ का फरमान हे - एक शख्स लगातार नेक काम

करता हे यहाँ तक कि बिल्कुल जन्नत के करीब पहुँच जाता हे, फिर अचानक वही शख्स तकदीर के मुताबिक बुरे काम करने लगता हे यहाँ तक कि वह दोज़ख मे चला जाता हे. इसी तरह एक शख्स बुरे काम करता हे और दोज़ख के बिल्कुल करीब पहुंच जाता हे, फिर वह अचानक तकदीर के मुताबिक अच्छे अमल करने लगता हे, यहाँ तक कि वह जन्नत मे चला जाता हे. (सही बुखारी किताबुल कदर)

इस हदीस का मतलब यह हे कि अल्लाह तआला पहले से जानते हे कि कौन कब और क्या अमल करेगा, वह अपने असीमित इल्म की बदौलत यह भी जानते हे कि यह गुनाहगार इन्सान आखिरकार तौबा कर लेगा और नेक अमल करने लगेगा और उसी (अच्छे अमल) पर इसका खात्मा होगा.

या यह नेकी करने वाला आखिरकार नेकी का दामन छोडकर गुनाहों की तरफ रागिब हो जायेगा और उसी बुराई की हालत मे इसका खत्मा होगा.

तकदीर के बारे मे यह धारणा और सोच बहुत ही गुमराह करने वाली हे कि इन्सान तकदीर के हाथों मजबूर हे और वह अपनी

मरजी और इख्तियार से कुछ नहीं कर सकता, हालाँकि नेकी और बुराई की राह इख्तियार करना इन्सान का अपना फेल हे. तफसील के लिये पढिये तफसीर सूरे कहफ/२९ और सूरे दहर/३

अल्लाह तआला का कोई जबर (ज़बरदस्ती और दबाव) नहीं हे

इसकी मिसाल यूँ समझें कि एक टीचर इम्तिहान से पहले अपने शगिर्दो के बारे मे अन्दाज़ा लगाता हे कि फला पास होगा फला फेल होगा, और अगर उसका अन्दाज़ा दुरूस्त साबित हो जाये तो यह हरगिज़ नहीं कहा जा सकेगा कि यह टीचर के अन्दाज़े की वजह से पास या फेल हुए हे.

पास या फेल होना उनके अपने अमल की वजह से हे, जिस तरह टीचर का अन्दाज़ा लगाना शगिर्दो को पास या फेल होने पर मजबूर नहीं करता इसी तरह अल्लाह तआला का मख्लूक के बारे मे अपने भविष्य के इल्म की वजह से तकदीर लिखना इन्सानों को किसी काम पर हरगिज़ मजबूर नहीं करता हे.

कई बार कुछ लोग तकदीर की आड मे अपनी ज़िम्मेदारियों से दामन छुडाने की कोशिश करते हे, अगर उनसे कहा जाये कि आप कारोबार और रोज़गार के लिये भाग दौड छोड दें, जो मुकद्दर मे लिखा हुआ हे वह मिलकर ही रहेगा, तो उनका जवाब यह होता हे कि उसके लिये तकदीर के साथ साथ भाग दौड और कोशिश भी ज़रूरी हे, जिस तरह यहाँ तकदीर इन्सान पर दबाव डालकर उसे कोशिश और भाग दौड से नहीं रोकती बल्कि वह अमल के लिये आज़ाद हे इसी तरह किसी भी मामले मे उस पर तकदीर का जबर (ज़बरदस्ती और दबाव) नहीं होता, बल्कि वह हर अमल के लिये आज़ाद व खुदमुख्तार हे.

अल्लाह तआला का इरशाद हे सूरे नज्म ५३/४० तर्जुमा - और इन्सान के लिये वही कुछ होगा जिसकी उसने कोशिश की होगी.

(तिर्मिज़ी, सलमान फारसी रदी, की रिवायत से) रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया तकदीर को दुआ के अलावा कोई चीज़ नहीं बदल सकती और उम्र मे इज़ाफा सिलारहमी (रिश्तेदारी निभाने) के अलावा कोई चीज़ नहीं कर सकती.

इसलिये हर नमाज़ के बाद यह दुआ माँगिये -
या अल्लाह मरते वकत मेरी ज़बान पर 'ला इलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह' हो और मुझे सिर्फ अपनी रहमत व फज़्ल से जन्नतुल् फिरदौस अता फरमाए. आमीन.

तकदीर की यह किस्म जो उपर बयान की गई हे इसको “तकदीर ए मुअल्लक” कहते हे.

तकदीर की एक दूसरी किस्म भी हे जिसको “तकदीर ए मुबम” कहते हे.

तकदीर ए मुबम वह हे जिसके होने या न होने पर इन्सान को न तो जज़ा मिलेगी और न ही सज़ा, सिर्फ इसलिये कि उस पर न तो उसका इख्तियार हे और न ही वह अमल करने के लिये आज़ाद हे, मसलन मौत, मरने की जगह, पैदाईश की जगह, रिज्क वगैरह.

तकदीर पर ईमान लाने और मज़बूत यकीन से मुसलमान की ज़िन्दगी पर बहुत अच्छा असर पडता हे, जब यह यकीन हो जाये कि मौत न मुकर्ररा वकत से टल सकती हे और न ही उससे पहले आ सकती हे तो दिल से मौत का खौफ निकल

जाता हे.

जब यह यकीन हो जाये कि अल्लाह तआला की मरजी के बगैर न कोई मुसीबत आ सकती हे और न ही जा सकती हे तो फिर दिल से अल्लाह तआला की मख्लूक का खौफ निकल जाता हे और सिर्फ अल्लाह करीम की रज़ा रह जाती हे और यह ईमान बन जाता हे कि हमारी हर कामयाबी अल्लाह तआला के सिर्फ फज़्ल व करम का ही नतीजा होती हे, और जो नाकामी होती हे उसमे भी अल्लाह रहीम की कोई न कोई मस्लेहत शामिल होती हे, या खुद हमारे गुनाहों का नतीजा होती हे जिसमे सबर की सूरत मे हमारे गुनाह माफ होते हे जो कि खुद एक बहुत बडी मस्लेहत (बेहतरी) हे.

बहत सी बार इस बात को देखा गया हे कि जिस बात या नतीजे को हम अपने लिये बुरा समझ रहे थे बाद मे मालूम होता हे कि वह बुरा न था बल्कि बहुत अच्छा था.

तफसील के लिये पढिये तफसीर सूरे बकरह २/२१६